IJAER/ Jan-Feb 2023/Volume-12/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में भावनात्मक परिपक्वता का अध्ययन

सिमरन चौधरी
शोधार्थी
शिक्षा विभाग
मालवांचल विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश।

डा.प्रियंका बंसल
शोध निर्देशिका
शिक्षा विभाग
मालवांचल विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश।

शिक्षा का उद्देश्य मानव मन को शान्त बनाना है, मानव मन को प्राकृतिक बनाना है, मानव मन को पोषित और शांत करना है। भावात्मक परिपक्वता एक खुशहाल और पूर्ण जीवन की कुंजी है, जिसके बिना व्यक्ति आसानी से निर्भरता और असुरक्षा की चपेट में आ जाता है। वर्तमान समय में मनुष्य को जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। ये स्थितियाँ और कठिनाइयाँ दैनिक जीवन में चिन्ता, तनाव, निराशा, खराब मानसिक स्वास्थ्य और भावात्मक उथल—पुथल जैसे कई मनोदैहिक विकारों को जन्म दे रही हैं। भावात्मक परिपक्वता व्यक्ति की स्थितियों के प्रति सकारात्मक मानसिक दृष्टिकोण बनाने की क्षमता का माप है। यह स्वयं की एजेंसी के माध्यम से आवेग नियंत्रण की प्रक्रिया है।

'संवेग एक जीव की एक उत्तेजना या उत्तेजित अवस्था है। यह एक उत्तेजित अवस्था की भावना है जिस तरह से यह व्यक्ति को स्वयं दिखाई देती है। यह एक अव्यवस्थित मांसपेशी और ग्रंथियों की गतिविधि है जिस तरह यह बाहरी पर्यवेक्षक को दिखाई देती है।'

'परिपक्वता' मनुष्य के विकास में एक बहुत ही महत्वपूर्ण चरण को संदर्भित करता है। परिपक्वता तब प्राप्त होती है जब व्यक्ति का विकास पूरा हो जाता है और वह प्रसार के लिए परिपक्व हो जाता है। परिपक्वता की अवधारणा का उपयोग मनोविज्ञान और मनोचिकित्सा में किया जाता है। क्षेत्र यह व्यक्तित्व विकास के उस चरण को निर्दिष्ट करता है जो जैविक और मनोवैज्ञानिक परिपक्वता से मेल खाता है। विशेष रूप से मनोविज्ञान में परिपक्वता की परिभाषा में भावनात्मक नियंत्रण शामिल है। इसका मतलब है कि भावनात्मक रूप से परिपक्व लोग अपनी भावनाओं को नियन्त्रित रखने में सक्षम होते हैं। जब वह व्यवहार करेगा तो उसे परिपक्व या स्थिर कहा जाएगा परिपक्व तरीके से। परिपक्वता रिश्ते की जिम्मेदारियों को निभाने की क्षमता है और इसका मतलब भरोसेमंद होना है। लोग मनोवैज्ञानिक रूप से परिपक्व तभी कहलाते हैं जब वह सामाजिक और भावनात्मक बुद्धिमत्ता और दृष्टिकोण के एक निश्चित स्तर तक पहुँच जाता है। यदि लोगों का विकास अबाधित है, जैविक और मनोवैज्ञानिक परिपक्वता कमोबेश एक दूसरे के साथ समानांतर रूप से आगे बढ़ती है। हालाँकि, शारीरिक परिपक्वता भावनात्मक परिपक्वता से आगे बढ़ती है।

भावनात्मक परिपक्वता हमारी भावनाओं को समझने और प्रबन्धित करने की हमारी क्षमता को संदर्भित करती है। भावनात्मक परिपक्वता हमें वह जीवन बनाने में सक्षम बनाती है जो हम चाहते हैं। खुशियों और संतुष्टि से भरा जीवन। हम सफलता को दूसरों के नहीं बल्कि अपने हिसाब से परिभाषित करते हैं और उसे हासिल करने

का प्रयास करते हैं। हमारी भावनात्मक परिपक्वता हमारे विचारों और व्यवहारों से देखी जाती है। जब हमें किसी कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ता है, तो हमारी भावनात्मक परिपक्वता का स्तर कठिनाइयों से लड़ने की हमारी क्षमता को निर्धारित करने वाले सबसे बड़े कारकों में से एक है।

मानव के विकास एवं उन्नति में भावात्मक परिपक्वता का विशेष महत्व होता है उन्नति एवं विकास मानव के पूरे जीवन को प्रभावित करते हैं। भावात्मक परिपक्वता के अभाव में व्यक्ति का व्यक्तित्व विघटित हो जाता है। जब व्यक्ति अपने संवेगों का सही प्रयोग करना सीख जाता है तो उसे भावात्मक परिपक्वता कहते हैं। समाज में संवेगों की महत्वपूण भूमिका होती है। मानव व्यवहार को संगठित या संतुलित बनाने में संवेगों का विशेष महत्व होता है क्योंकि उत्तेजना एवं अनुक्रिया के रूप में जहाँ वह एक ओर दूसरों से प्रभावित होता है वहीं दूसरी ओर उन्हें भी प्रभावित करता है। यह प्रकिया देखने में सरल व सामान्य लगती है परन्तु वास्तविकता यह है इसका स्वरूप उतना ही अधिक सूक्ष्म एवं जटिल होता है। एक संगठित व्यक्तित्व के लिये यह आवश्यक है कि वह तनावों, कुण्ठाओं एवं अर्तद्वन्दों से मुक्त हो, चितिन्त या तनाव ग्रस्त व्यक्ति किसी भी स्थिति में न तो उद्देश्यपूर्ण ढंग से कार्य कर सकता है न ही तार्किक चिंतन कर सकता है और न ही प्रभावषाली ढंग से अपने परिवेश के साथ उपयुक्त संतुलन ही स्थापित कर सकता है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि व्यक्ति उन परिस्थितियों पर अपना विशेष नियन्त्रण रखे जो उसके जीवन को अस्त—व्यस्त कर देती हैं। किसी भी स्थिति में विचलित व्यक्ति अपने परिवेश के साथ अपेक्षित व्यवहार नहीं कर पाता है।

प्रस्तुत शोध का औचित्य

भावनात्मक परिपक्वता पर आधारित विभिन्न शोधों का गहन अध्ययन करने के बाद, शोधकर्ता ने यह पाया कि इस विषय पर मेरठ, विशेषकर किशोरों के संदर्भ में अब तक पर्याप्त, विस्तृत और व्यवस्थित रूप से अध्ययन नहीं किया गया है। लिंग और स्कूल के प्रकार के आधार पर भावनात्मक परिपक्वता से संबंधित कोई संतोषजनक परिणाम उपलब्ध नहीं हैं। इसके अलावा, इन कारकों के आपसी संबंध और उनके किशोरों के लिंग और स्कूल के प्रकार के संदर्भ में विश्लेषण के लिए भी अभी तक पर्याप्त प्रयास नहीं किए गए हैं। यह स्पष्ट है कि इस क्षेत्र में अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। इस विषय को बेहतर ढंग से समझने की जिज्ञासा ने शोधकर्ता को इस अध्ययन को शैक्षणिक जांच के लिए तैयार करने के लिए प्रेरित किया।

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की भावनात्मक परिपक्वता का अध्ययन

अध्ययन में प्रयुक्त चरों की संक्रियात्मक परिभाषा

भावनात्मक परिपक्वता

भावनात्मक परिपक्वता न केवल व्यक्तित्व पैटर्न का प्रभावी निर्धारक है बल्कि एक किशोर के विकास की वृद्धि को नियंत्रित करने में भी मदद करती है। एक व्यक्ति जो अपनी भावनाओं को नियंत्रण में रखने में

सक्षम है, जो देरी को सहन करने और आत्म—दया के बिना पीड़ित होने में सक्षम है, वह अभी भी भावनात्मक रूप से स्तब्ध और बचकाना हो सकता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी शोध अध्ययन के स्वरूप, प्रारूप, न्यादर्श के चुनाव से लेकर परिणाम तथा निष्कर्ष निकालने तक की समस्त प्रक्रिया का आधार शोध उद्देश्य में निहित होता है। शोधार्थी ने वर्तमान शोध के लिए निम्न उद्देश्य निर्धारित किए हैं—

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य भावनात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य भावनात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ

शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए उपरोक्त शोध उद्देश्यों को दृष्टिगत करते हुए शोधार्थी ने निम्न शोध परिकल्पनाओं का निर्माण किया है।

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य भावनात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य भावनात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रस्तुत शोध का सीमांकन

शोध क्षेत्र का परिसीमांकन शोधार्थी अपनी क्षमताओं आर्थिक, सामाजिक, नैतिक अवस्थाओं समयावधि, संसाधन एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर करता है। अत:, प्रस्तुत शोध कार्य की सीमाएं निम्न निर्धारित की गई है—

1- प्रस्तुत अध्ययन को उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों तक सीमित किया गया है।

2- माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 100 विद्यार्थियों का चयनित किया गया है।

3- प्रस्तुत अध्ययन में कक्षा 10 में पढ़ने वाले विद्यार्थी सम्मिलित किए गये हैं।

4- प्रस्तुत शोध में डा. तारा सबापैथी, एसोसिएट प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष, विजया शिक्षक महाविद्यालय, बैंगलोर द्वारा निर्मित भावात्मक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया है।

सम्बन्धित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

सिलोनी, चिराग (2022) 'अण्डरग्रेजुएट कॉलेज के छात्रों के बीच भावनात्मक परिपक्वता और आत्म अवधारणा'

भावनात्मक परिपक्वता न केवल व्यक्तित्व पैटर्न का एक प्रभावी निर्धारक है, बल्कि यह किसी व्यक्ति की वृद्धि और विकास को नियन्त्रित करने में भी मदद करती है। आपको सत्ता का आनन्द लेने की अपनी क्षमता पर उचित ध्यान देना होगा। भावनात्मक परिपक्वता और आत्म—अवधारणा मूल्य बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि हम जानते हैं कि छात्र भावी पीढ़ियों के स्तम्भ हैं। इसलिए, वर्तमान अध्ययन जम्मू के पुरुष और महिला छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता और आत्म—अवधारणा की जांच करने के लिए आयोजित किया गया था, 59 पुरुष और

59 महिला छात्र थे, जिनकी उम्र 19 से 22 वर्ष के बीच थी। यशविल सिंह और महेश भार्गव द्वारा भावनात्मक परिपक्वता स्केल और सारस्वत द्वारा स्व—अवधारणा प्रश्नावली का उपयोग करके डेटा एकत्र किया गया था। इस अध्ययन में, हमने एक उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण विधि का उपयोग किया। पुरुष और महिला स्नातक छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता और पुरुष और महिला स्नातक छात्रों की आत्म अवधारणा में अन्तर पाया गया। अध्ययन से किशोरों की आत्म—अवधारणा पर भावनात्मक परिपक्वता के प्रभाव पर कई नए दृष्टिकोण सामने आए हैं।

दवे, अंजलि (2019) 'भावनात्मक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धिः एक सहसम्बन्धी अध्ययन' एक किशोर के जीवन में विभिन्न परिवर्तन भावनात्मक संघर्षों को जन्म देते हैं, जिससे इसकी अभिव्यक्ति या दमन होता है। जीवन के इस चरण में किशोरों की भावनाओं और संवेगों का उचित प्रकोप महत्वपूर्ण है। जो व्यक्ति अपनी भावनाओं पर काबू रखने में सक्षम होता है, उस भावनात्मक रूप से परिपक्व माना जाता है। शैक्षणिक उपलब्धि एक वांछित ग्रेड या क्षमता की प्राप्ति है। एक आम धारणा है कि भावनात्मक परिपक्वता शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। भावनात्मक परिपक्वता शैक्षणिक उपलब्धि से सम्बन्धित हो सकती है, इसलिए शोधकर्ता ने दो चर के बीच सह—सम्बन्ध का पता लगाने के लिए यह अध्ययन किया है। वर्तमान अध्ययन में भावनात्मक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सह—सम्बन्ध पाया गया है। अध्ययन के निष्कर्षो से भावनात्मक परिपक्वता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच महत्वपूर्ण संबंध का पता चला। यह अध्ययन शिक्षकों और शैक्षिक प्रशासकों के लिए सहायक हो सकता है।

हलेशप्पा, टी. (2019) ने **'शैक्षणिक संबंध में सामाजिक रूप से वंचित छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा, आत्म—अवधारणा और भावनात्मक परिपक्वता का एक अध्ययन उपलब्धि'**। उनकी जांच का सामान्य उद्देश्य सामाजिक रूप से वंचित छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के साथ उपलब्धि प्रेरणा, आत्म—अवधारणा और भावनात्मक परिपक्वता के बीच संबंध, अंतर और बातचीत का पता लगाना था। उनकी जांच के नतीजों से यह अनुमान लगाया गया कि उच्च उपलब्धि से प्रेरित लडके और लडकियां, सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय के छात्र और ग्रामीण और शहरी छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि सांख्यिकीय रूप से उच्च स्तर की है, जबकि तुलनात्मक रूप से कम उपलब्धि से प्रेरित लडके और लडकियां, सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय के छात्र और ग्रामीण और शहरी हैं। शहरी छात्र. उच्च उपलब्धि से प्रेरित लडके और लडकियाँ, सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय के छात्र और ग्रामीण और शहरी छात्र, सांख्यिकीय रूप से उच्च स्तर की भावनात्मक परिपक्वता रखते हैं, तुलनात्मक रूप से कम उपलब्धि से प्रेरित लडके और लडकियाँ, सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय के छात्र और ग्रामीण और शहरी छात्र। उपलब्धि प्रेरणा और भावनात्मक परिपक्वता आत्मविश्वास से लडकों और लडकियों, ग्रामीण और शहरी छात्रों, सरकारी और निजी स्कूल के छात्रों और कुल नमूने की शैक्षिक उपलब्धि से जुड़ी हुई है। छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि उपलब्धि प्रेरणा और भावनात्मक परिपक्वता से आकार लेती है।

कुमारी, पी. (2019) ने **'भावनात्मक परिपक्वता, पारिवारिक माहौल और नियंत्रण के स्थान के संबंध में हाई स्कूल के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों का एक अध्ययन'** पर जांच की। शोधकर्ता के अनुसंधान से यह पाया गया कि छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में काफी भिन्नता है तथा महिला विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि

पुरूष छात्रों की तुलना में बेहतर है। सरकारी और निजी स्कूल के छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन में काफी अंतर है और निजी स्कूल के छात्रों ने सरकारी स्कूल के छात्रों की तुलना में बेहतर शैक्षणिक परिणाम हासिल किए हैं। भावनात्मक परिपक्वता के मामले में पुरुष और महिला छात्रों में प्रमुख भिन्नता पाई गई और महिला छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता पुरुष छात्रों की तुलना में बेहतर है। सरकार की भावनात्मक परिपक्वता में भी सराहनीय अंतर पाया गया। छात्रों और निजी छात्रों और निजी छात्रों में सरकारी स्कूल के छात्रों की तुलना में बेहतर भावनात्मक परिपक्वता होती है। इसके अलावा हाई स्कूल के छात्रों के बीच शैक्षिक उपलब्धि और भावनात्मक परिपक्वता के बीच काफी अंतर—संबंध पाया गया।

शोध विधि एवं शोध प्रक्रिया

शोधार्थी द्वारा चयनित की गई अनुसंधान समस्या 'माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं में भावनात्मक परिपक्वता का अध्ययन' एक अप्रयोगात्मक अध्ययन है जिसकी प्रकृति वर्णनात्मक है। अत: शोध समस्या व साहित्य का विश्लेषण करने के पश्चात शोधार्थी ने वर्णात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि चयन करने का निर्णय लिया।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन की जनसंख्या मेरठ जिले में स्थित माध्यमिक विद्यालय सम्मलित हैं। मेरठ जिले के माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को अनुसंधान कार्य हेतु चयन किया गया है। अत: मेरठ जिले के माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 10 में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थी इस शोध कार्य की जनसंख्या है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की प्रतिदर्श

वर्तमान अध्ययन के लिए न्यादर्श में माध्यमिक स्तर के 05 स्कूलों से 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर

- भावनात्मक परिपक्वता

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

परीक्षा दुश्चिंता परीक्षण (2012)

आंकड़ों के संग्रहण हेतु विद्यार्थियों की भावात्मक परिपक्वता को मापने हेतु डा. तारा सबापैथी (एसोसिएट प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष, विजया शिक्षक महाविद्यालय, बैंगलोर) द्वारा निर्मित भावात्मक परिपक्वता मापनी का प्रयोग किया गया।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ

शोधार्थी ने अपने शोध अध्ययन में प्रदत्तों का विश्लेषण करने हेतु वर्णनात्मक सांख्यिकीय प्रविधियों जैसे— मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' मान आदि का प्रयोग किया है।

आंकड़ों का विश्लेषण

वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधि द्वारा जो आंकड़े प्राप्त होते हैं, उनका विश्लेषण एवं विवेचन करना शोध कार्य की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। विश्लेषण के आधार पर ही शोधार्थी द्वारा शोध कार्य सम्बन्धी सही निष्कर्ष तथा उपलब्धि का निरूपण किया गया है।

उद्देश्य–1

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य भावनात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।

परिकल्पना– $H_0 1$

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य भावनात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या– 1.1

माध्यमिक स्तर के छात्र—छात्राओं के मध्य भावनात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन

वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी—मान	सार्थकता स्तर
छात्र	50	20.12	3.19	**2.51**	0.01
छात्रायें	50	22.15	4.74		

‘टी’ मूल्य 2.51 > तालिका मूल्य 2.58 (0.01 सार्थकता स्तर)

तालिका संख्या 1.1 के अर्न्तगत छात्र एवं छात्राओं की भावनात्मक परिपक्वता के मध्यमान में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए तुलना की गयी हैं इस तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 98 पर **‘टी’** परीक्षण का मूल्य 2.51 सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। उपरोक्त तालिका में निम्न मध्यमान 20.12 जो छात्रों का है तथा उच्च मध्यमान 22.15 जोकि छात्राओं का है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त ‘टी’ का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में अधिक है। इस प्रकार इस परीक्षण परिणाम में छात्राओं की भावनात्मक परिपक्वता छात्रों की तुलना में उच्च स्तर की है।

अतः प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर पूर्व में निर्मित शून्य परिकल्पना ($H_0 1$) ‘माध्यमिक स्तर के छात्र—छात्राओं के मध्य भावनात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं है।’ अस्वीकृत की जाती है। अर्थात छात्र एवं छात्राओं की भावनात्मक परिपक्वता के मध्यमान में सार्थक अन्तर है।

उद्देश्य–2

सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य भावनात्मक परिपक्वता का अध्ययन करना।

परिकल्पना– $H_0 2$

सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य भावनात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या– 1.2

सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य भावनात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन

<table>
<tr><th>वर्ग</th><th>संख्या</th><th>मध्यमान</th><th>मानक विचलन</th><th>टी—मान</th><th>सार्थकता स्तर</th></tr>
<tr><td>सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी</td><td>50</td><td>25.26</td><td>4.19</td><td rowspan="2">3.72</td><td rowspan="2">0.01</td></tr>
<tr><td>गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी</td><td>50</td><td>26.12</td><td>3.46</td></tr>
</table>

‘टी’ मूल्य 3.72 > तालिका मूल्य 2.58 (0.01 सार्थकत स्तर)

तालिका संख्या 4.2 के अर्न्तगत सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं में भावनात्मक परिपक्वता के मध्यमान में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए तुलना की गयी हैं इस तालिका में सांख्यिकीय गणना द्वारा प्राप्त स्वतन्त्रता के अंश 98 पर **‘टी’** परीक्षण का मूल्य 3.72 सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। उपरोक्त तालिका में उच्च मध्यमान 26.12 जो गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का है तथा निम्न मध्यमान 25.26 जोकि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का है। सांख्यिकीय गणना से प्राप्त ‘टी’ का मान तालिका के मान से तुलनात्मक रूप में अधिक है। इस प्रकार इस परीक्षण परिणाम में सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता का स्तर उच्च है।

अतः प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर पूर्व में निर्मित शून्य परिकल्पना (H_02) ‘सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य भावनात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं है।’ अस्वीकृत की जाती है। सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य भावनात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर है।

निष्कर्ष–

माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य भावनात्मक परिपक्वता से सम्बन्धित प्रमुख निष्कर्ष निम्न है— परिणामों के विश्लेषण के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के मध्य भावनात्मक परिपक्वता में सार्थक भिन्ता पायी गयी। सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्य भावनात्मक परिपक्वता में सार्थक भिन्नता पायी गयी है। अर्थात् माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावनात्मक परिपक्वता सार्थक भिन्नता पायी जाती है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची—

- आसरा, बी.के. व जोगसन, वाई.ए. (2014) ‘युवा पुरुष और महिला में आत्म—साक्षात्कार और भावनात्मक परिपक्वता’, एशियन रेजोनेंस, वॉल्यूम—3, आई.एस.एस.एन. 0976—8602, Pp. 129—132
- अलेक्जेंडर, एफ. (1967) ‘भावनात्मक परिपक्वता, मानसिक स्वास्थ्य’ हॉग फाउंडेशन, टेक्सास विश्वविद्यालय, ऑस्टिन, टेक्सास, इश्यू—6

- चोथानी, के. व वालैंड, पी.बी. (2014) 'सामान्य और विशेष स्कूल शिक्षकों के बीच भावनात्मक परिपक्वता', क्रिएटिव स्पेस: इण्टरनेशनल जर्नल, वॉल्यूम–2, अंक–03–04, पृ. 20–28, आई.एस.बी.एन. : 2347–1689
- जोगसन, वाई. ए. (2011) 'टाइप–2 डायबिटिक व्यक्तियों में भावनात्मक परिपक्वता पर योग के प्रभाव पर एक अध्ययन', इंडियन जर्नल ऑफ हेल्थ एंड वेलबीइंग, वॉल्यूम–2, अंक–I, पी.पी. 101–103, आई. एस.एस.एन. 2229–5356
- कलैसेल्वन, एस. व माहेश्वरी, के. (2016) 'स्नातकोत्तर छात्रों के बीच भावनात्मक परिपक्वता पर एक अध्ययन', जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस, आई.ओ.एस.आर., वॉल्यूम– 21, अंक–2, आई.एस. एस.एन. 2279–0837, पृ. 32–34
- मिश्रा, एम. व उपाध्याय, एस. (2011) 'किशोर लडकियों में भावनात्मक परिपक्वता, आक्रामकता, तनाव और समायोजन', इंडो–इंडियन, जर्नल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च, वॉल्यूम–7, नंबर 2, पृ. 130–134, आई. एस.एस.एन. 0975–1343
- सिन्हा, वी.के. (2014) 'कॉलेज के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता और समायोजन का एक अध्ययन', इंडियन जर्नल ऑफ एप्लाइड रिसर्च, वॉल्यूम–4, अंक–5
- सोलंकी, पी. (2013) 'कला और विज्ञान के छात्रों के बीच भावनात्मक परिपक्वता का एक अध्ययन', इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च पैरिपेक्स, वॉल्यूम–2, अंक–8
- वाघेला, आर. (2014) 'ग्रामीण क्षेत्र के आवासीय और गैर–आवासीय स्कूली बच्चों के व्यक्तित्व विशेषताओं, भावनात्मक परिपक्वता और माता–पिता के सम्बन्धों का तुलनात्मक अध्ययन', अप्रकाशित पीएच. डी. थीसिस, हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय, पट्टन, गुजरात।